(पेज 1)

R.M.M Law College Saharsa

2

Arvindra Kumar Dwivedi
part-time Law Teacher
Subject: Evidence
साक्ष्य विधि

साक्ष्य अधिनियम धारा 1872 के
ऐसे कथन जिनकी प्रस्तुती हेतु न्यायालय साक्षियों को देता है जो विचाराधीन मामले के लिये आवश्यक है साक्ष्य कहलाते हैं तथा सभी दस्तावेज जो न्यायालय के निरीक्षण के लिये प्रस्तुत किये जाते हैं साधारण दस्तावेजी साक्ष्य माना जाता है।

अदालत के [illegible] शब्दकोष में साक्ष्य का अर्थ उन उल्लिखित तत्वों को कहते हैं, जिसके द्वारा किसी तथ्य को विरुद्ध [illegible] आविष्कार करने का प्रयास किया जाए। किसी बात को प्रमाणित करने के लिये न्यायालय के तर्क आधार किया जाता है वह साक्ष्य के अंतर्गत माना जाता है। मौखिक साक्ष्य जो न्यायालय में अभिव्यक्त किया जाता है धारा - 51 से धारा 60 तक उल्लेख किया जाता है। उसी तरह दस्तावेजी साक्ष्य 61, 62, 63 में उल्लेख किया जाता है। मौखिक साक्ष्य और दस्तावेजी साक्ष्य न्यायालय को मान्यता देने के लिये होती है। प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जो साक्ष्य न्यायालय के आता है अपने विचाराधीन होता है। न्यायालय की परीक्षण और अवलोकन की आधार पर वास्तविक साक्ष्य के लिए है

Scanned with CamScanner

सुसंगत तथ्य (Relevancy and Admissibility terms)

पेज 2

सुसंगत — एक तथ्य दूसरे तथ्य से सुसंगत कहा जाता है जबकि तथ्यों की सुसंगति से सम्बन्धित इस अधिनियम के उपबन्धों में निर्दिष्ट प्रकारों में से किसी भी प्रकार से वह तथ्य उस दूसरे तथ्य से संसक्त हो।

विवाद्यक तथ्य से अभिप्रेत है कोई भी तथ्य जिसी अधिकार या दायित्व कोई न्यायालय विवाद्यक तथ्य की सिविल प्रक्रिया से सम्बन्धित विधि तत्समय प्रवृत्त विधि के उपबन्धों ... अभिलिखित करता है तब ऐसे विवाद्यक तथ्य को उत्तर में जिस तथ्य का प्रत्याख्यान किया जाता है। वह विवाद्यक तथ्य है।

दृष्टान्त — जैसे क ने ख की हत्या की। इसमें साबित वाली बात यह है कि क ने ख की हत्या किस परिस्थिति में या कोई ठोस कारण साबित आदि। मौखिक तथ्य जिनको न्यायालय में लाते हैं और उनमें जो मौखिक बातचीत से आते हैं और दस्तावेजी साक्ष्य दस्तावेज द्वारा आते हैं वह दस्तावेजी साक्ष्य कहलाते हैं। जैसे A का विवाह B के साथ हुआ और B अपने पति के जीवित साथ रहने लगी। इसी बीच पति की मृत्यु 280 दिन की अवधि के भीतर B ने एक शिशु को जन्म दिया। यहाँ विधि उस बात का अनुमान करती है कि B. ने जिस शिशु को जन्म दिया वह A से समागम द्वारा उत्पन्न हुआ है। उस पुत्र को न्यायालय से सारे अधिकार पिता का चल एवं अचल सम्पत्ति पा सकेगा।

Scanned with CamScanner

पेज नं. 3

5

माना जाता है। कभी कभी मौलिक दस्तावेज नष्ट
हो जाता है तब न्यायालय उक्त दस्तावेज का
प्रतिलिपी से भी काम ~~[illegible]~~ या उपयोग में
ला सकता है। यदि कोई व्यक्ति कहे कि मैंने
उक्त दस्तावेज को देखा है तब उसे गौण साक्ष्य
माना जायगा और उसकी मान्यता रहेगी।
अधिनियम 25 के अंतर्गत पुलिस की कोई
स्वीकृति होती है तो उसे धारा 26 के अन्तर्गत
उसकी मान्यता नहीं होती है। जबकि
~~कोई~~ पुलिस के डर से भी ऐसी हो सकती है।
वही साक्ष्य अधिनियम में मजिस्ट्रेट के सामने हुई
तो उसे सही माना जायगा।